E-ISSN-2584-2870 DOI: https://doi.org/10.65833/dbs.2026.007

देवभूमि-सौरभम्
Devabhūmisaurabham

Vol 2 Issue 2 July-Dec 2025 Devabhūmisaurabham International Journal of CSU Shri Raghunath Kirti Campus Devprayag Uttarakhand India

मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा

डॉ. शिवदत्त आर्य

सहायक आचार्य, शिक्षापीठ,

श्री ला.ब.शा.रा.सं.वि.वि.,

नई दिल्ली

शोधसार **(Abstract)**

विश्वव्यापी समस्याओं का प्रत्यक्ष सम्बन्ध व्यक्ति और समाज से है और अंतिम रूप से उसकी शिक्षा और शिक्षा प्रणाली से है। यही कारण है आज सम्पूर्ण विश्व तथा विश्वस्तरीय संस्थायें उपरोक्त समस्याओं के निराकरण के लिए शिक्षा को इंगित कर रही है। शिक्षा का दायित्व आज बढ़ गया है, अतः शिक्षा आज अपने व्यापक रुप में ग्राह्य है। यदि शिक्षा जीवन पर्यन्त प्रकिया है तो यह स्थिर नहीं रह सकती और न ही वैयक्तिक व सामाजिक जीवन की उपेक्षा ही कर सकती है। शिक्षा की व्यापकता को सार्थक रुप देने में योग्य, दक्ष एवं गुणवान् शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है I योग्य, दक्ष एवं गुणवान् शिक्षकों की आवश्यकता पूर्ति अध्यापक शिक्षा की शिक्षा के माध्यम से होती है। अतः मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा द्वारा विभिन्न स्तरीय एवं वर्गीय अध्यापकों को इस तरह से शिक्षित करने का प्रयत्न किया जाता है कि अग्रिम पीढ़ी को ज्ञान एवं मूल्यों के हस्तान्तरण के साथ ही उनके समस्त शैक्षिक एवं विकासात्मक दायित्वों को ग्रहण एवं वहन करने में वे सक्षम हो सकें तथा उनमें तकनीकी कुशलता, वैज्ञानिक चेतना तथा नवाचारिकता के साथ सांस्कृतिक सम्बन्ध एवं मानवता बोध का समन्वयात्मक विकास करना सम्भव हो सके। **NEP 2020** में भी अध्यापक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है।

मुख्यशब्द (Keywords)

अध्यापक शिक्षा, मूल्य, मानवता, नवाचारिकता, सामाजिक जीवन, गुणवान् शिक्षक

भूमिका

भारत में वैदिक काल से ही शिक्षा के विषय में गम्भीर चिन्तन की परम्परा रही है। ऋषि-मुनियों ने मानव जीवन के विकास के लिए अनेक ज्ञानात्मक एवं आध्यात्मिक तथ्यों एवं विचारों को प्रस्तुत किया साथ ही अनेक ऐसे सार्वभौमिक मूल्यों की स्थापना की जिससे मानव अपना जीवन सफल बना सके और इस महत्वपूर्ण कार्य को सम्पन्न करने में शिक्षक को मुख्यता प्रदान की है। आदिकाल से ही मानव अपने एवं वातावरण सम्बन्धी विकास के लिए सतत् प्रयत्नशील रहा है। मानव विकास में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। एक योग्य शिक्षक ही इस महान कार्य को पूर्ण कर सकता है अतः यह आवश्यक हो गया है कि अध्यापक शिक्षा भी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मूल्यों से युक्त हो तथा समुचित प्रकार से संचालित हो। मूल्ययुक्त शिक्षक के प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष व्यवहार से ही, ज्ञान प्रदान करने से छात्र अनुकरण के माध्यम से मूल्ययुक्त व्यवहार का प्रत्यक्षीकरण करते है एवं शिक्षा ग्रहण करते हैं। इससे प्रेरित होकर छात्र स्वविकास में संलग्न होते हैं, अनेक क्षमताओं एवं योग्यताओं से युक्त होकर सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास में अपना सकारात्मक सहयोग प्रदान करते हैं। एक प्राध्यापक की दृष्टि निरन्तर –

पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परिक्ष्यान्यतरद्भजन्ते मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः॥[1]

आधुनिक और प्राचीन के समन्वय की होनी आवश्यक है।मूल्यों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र एवं स्तर के सन्दर्भ के रूप में प्रयोग किया जाने लगा है जिनका विस्तार शारीरिक से लेकर, धार्मिक, नैतिक, आध्यात्मिक तथा सौन्दर्यात्मक तक होने लगा है। मुख्यतया मूल्य से तात्पर्य धर्म व चरित्र से है जिसकी अध्यापक शिक्षा में महती आवश्यकता है क्योंकि अध्यापक को राष्ट्र निर्माण का प्रमुख कार्य सौपा गया है। अध्यापक को गुरु पद पर भी आसीन किया गया है। 'गु' अक्षर अन्धकार तथा 'रु' अक्षर प्रकाश हेतु है। जो अपने शिष्य की बुद्धि का अन्धकार हरकर उसके अन्दर विद्या का प्रकाश भरे- वह गुरु कहलाता है। वह सच्चे मायने में निर्माता है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश के तुल्य है। शास्त्र में उसकी स्तुति इन शब्दों में की गयी है। कालिदास एक अच्छे शिक्षक के गुणों को निम्न प्रकार से व्याख्यायित करते हैं-

श्लिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था संक्रातिरन्यस्य विशेषयुक्ता।
यस्योभयं साधु स शिक्षकाणां धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव॥[2]

इस प्रकार गुरु ज्ञान के संप्रेषण और ग्रहण में निरन्तर लगा रहना चाहिए।

मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा

[1] माल.1.2

[2] माल.1.16

शिक्षा समाज, राष्ट्र और विश्व की प्रगति का प्रतिबिम्ब होती है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है और शिक्षा, शिक्षार्थी और शिक्षक की परिधि में ही मानव समाज का उत्कर्ष निहित है। हमें परिवर्तनशील परिस्थितियों के सन्दर्भ में विश्व में सम्माननीय स्थान प्राप्त करना है और यह शिक्षा, शिक्षार्थी और शिक्षक के प्रयत्नों पर ही आधारित है। आज का युग संक्रमण काल है हमें सर्वत्र मूल्यों का हास होते दिख रहा है। मूल्यों के प्रति सोच में बदलाव आया है शिक्षा ग्रहण एवं प्रयोग में धर्म व चरित्र उत्थान के प्रति अभिरुचि अभिलक्षित नहीं होती है। कुशल प्रशिक्षण से युक्त शिक्षक ही शिष्य के अन्तर्गत विभिन्न मूल्यों का विकास करने में सक्षम हो सकता है। दुःख का विषय यह है कि सेवापूर्व शिक्षकों तथा सेवारत शिक्षकों में विभिन्न मूल्यों के प्रति अभिरुचि एवं सकारात्मक दृष्टिकोण परिलक्षित नहीं होता है। जिसका दुष्प्रभाव हमारी भावी पीढ़ी पर पड़ रहा है तथा छात्र एवं राष्ट्र का विकास निरन्तर अधोगति की ओर जा रहा है। शिष्य गुरु सम्बन्ध भी उसी प्रकार के प्रगाढ होने चाहिए जैसे कालिदास बताते है-

यद्यत्प्रयोगविषये भाविकमुपदिश्यते मया तस्यै।
तत्तद्विशेषकरणात्प्रत्युपदिशतीव मे बाला ॥[3]

सीखने की प्रवृत्ति भी एक शिष्य में निरन्तर से होनी चाहिए।

मूल्य व्यक्ति को निरंतर अपने लक्ष्य की ओर प्रेरित करने का सशक्त साधन है। उसमें आनंद और उत्साह का जो निखार आता है वह किसी संस्कृति, समाज एवं परंपरा को एक नई ऊँचाई प्रदान करता है। मूल्य जीवन जीना यानि अनुभव करना ही है। यदि मनुष्य की क्षमता या मानसिकता कुंठित हो जाये तो उसे नियत मूल्यों द्वारा ही शोधित कर सकते हैं। मानव की समानानुकूलन की भावना समाज में प्रतिष्ठा, एकता और सातत्यता लाती है तथा मानवोचित धर्म का पालन ही मूल्य है। जिसमें अहिंसा और सत्य शाश्वत मूल्य की श्रेणी में आते हैं। सदाचार, शिष्टाचार या ज्ञान की पिपासा को यदि किसी निकष (कसौटी) पर कसा जाये तो सम्पूर्ण विश्व में मूल्यरूपी आचारसंहिता ही उचित है। संसार में मनुष्य आचार से ही श्रेष्ठहोता है न की धन और विद्या से यह आचार मूल्य का द्योतक है। अध्यापक शिक्षा मानवीय गुण, चारित्रिक गुण तथा धर्मनिष्ठ आचरण से युक्त है। मानव समाज को चारित्रिक शिक्षा देते हुये यजुर्वेद में कहते हैं- 'हे शिष्य! तुम स्वयं शम-दमादि गुणों को धारण करते हुये अपने शरीर का निर्माण करो।' अध्यापक को अपने कार्यों को सम्पादित करने, गुणवत्तापूर्ण आश्वासन देने में आठ शैक्षिक मूल्यों का होना अनिवार्य है जिनमें सद्बुद्धि, कुलीनता, जितेन्द्रियत्व, शास्त्रज्ञान, सम्प्रेषणक्षमता, अल्पभाषण, यथाशक्ति विद्यादान एवं व्यावसायिककृतज्ञता हैं। अध्यापकों का आचरण समाजोन्नायक के रुप में होना चाहिये जो देश, जाति एवं समाज को सामाजिक परम्पराओं का अनुपालन करावें। एक गुरु और शिष्य के अन्दर सभी विद्याओं को ग्रहण, धारण, प्रसारण की ललक होनी चाहिए-

अधीतिबोधाचरणप्रचारणैर्दशाश्चतस्रः प्रणयन्नुपाधिभिः।

[3] माल.1.5

चतुर्दशत्वं कृतवान् कुतस्स्वयं न वेप्रि विद्यासु चतुर्दशस्वयम्।।[4]

मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा हेतु अपेक्षणीय कार्य -

- मूल्ययुक्त शिक्षक ही मूल्ययुक्त शिक्षा प्रदान करने में सक्षम हो सकता है तथा सामाजिक व्यवस्था तथा शिक्षण प्रणाली को सुचारु रूप से चलाने में अहम भूमिका निभा सकता है।
- उचित प्रशिक्षण से युक्त शिक्षक विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं वैश्विक समस्याओं के समाधान हेतु आधारभूत संरचनाओं को स्पष्ट करने में सक्षम हो सकता है।
- स्वविषयगत मूल्यों एवं आदर्शों का सृजन कर शिक्षण कराना।
- उचित प्रशिक्षण से युक्त शिक्षक, छात्र को विवेकशील एवं आदर्श नागरिक बनाने में दक्ष हो सकता है।
- उचित प्रशिक्षण से युक्त शिक्षक, छात्र को विवेकशील एवं आदर्श नागरिक बनाने में दक्ष हो सकता है।
- शिक्षक आदर्श होते हैं तथा छात्र अनुकरण के माध्यम से अधिक सीखते है अतः मूल्यों के सृजन के लिए सर्वप्रथम शिक्षकों को इन मूल्यों को सर्वप्रथम अपने जीवन में उतारना होगा।
- शिक्षक विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियायें जैसे-खेल-कूद, समाज-सेवा, राष्ट्रीय सेवा योजना, राष्ट्रीय कैडेट कोर, युवा उत्सव, राष्ट्रीय तथा सभी धर्मों के उत्सवों आदि कार्यक्रमों को उत्साह से आयोजित करे तथा छात्रों के विकास एवं संवर्धन में सतत सहायता करे।
- मूल्यपरक अध्यापक शिक्षण-प्रशिक्षण से शिक्षक के अन्तर्गत आत्मबल, आत्मसंयम, आत्मविश्वास, आत्मसन्तुष्टि, त्याग, आत्मसंतुलन, उदारता, सहिष्णुता, विनम्रता, सदाचार, सद्भाव, परिश्रमी प्रवृत्ति इत्यादि व्यक्तिगत गुणों का विकास होता है तथा वह इन गुणों से युक्त होकर समाज संरचना एवं संस्कृति की निर्बाध्य गति के विकास में सहायता प्रदान करता है।
- शिक्षा प्रणाली एवं समाज में विभिन्न प्रकार के मूल्यों जैसे शाश्वत मूल्य, व्यक्तिनिष्ठ मूल्य, नैमित्तिक मूल्य, तात्कालिक मूल्य, नैतिक मूल्यों की स्थापना में सहायता प्रदान में तत्पर हो।
- औपचारिक शिक्षण की अपेक्षा सर्वत्र सुसंस्कृत वातावरण का विकास करने की आवश्यकता।
- शिक्षा के उद्देश्य पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियां सभी मूल्यों को ध्यान में रखकर विकसित हो।
- पाश्चात्य पद्धति का अन्धानुकरण भारतीय परिवेश में न हो।
- लोकतान्त्रिक तरीके से अपने अधिकारों का प्रयोग करना।
- भारतीय संस्कृति की आध्यात्मिक आस्थाओं, सहिष्णुता, समन्वयवाद, वसुधैव कुटुम्बकम्, नारी के प्रति सम्मान, अहिंसात्मक प्रवृत्ति, पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति सदैव सजग रहना तथा दूसरों को प्रेरित करना।

[4] नैष.1.4

- कम्प्यूटर युग होने के कारण कम्प्यूटर का प्रायोगिक ज्ञान तथा विभिन्न संचार माध्यमों का प्रयोग मूल्ययुक्त शिक्षा के अन्तर्गत समुचित रूप से उपयोग लाने में दक्ष बनाना।
- अनुसन्धानात्मक एवं दूर दृष्टिकोण से युक्त अभिवृत्ति का विकास करना।
- उपभोक्तावादी संस्कृति से सजग रहने हेतु प्रेरित करना।
- शिक्षकों को आदर्श शिक्षक (रोल मॉडल) बनने के लिए प्रेरित करना।
- व्यक्तिगत प्रयास अत्यावश्यक।

मूल्य के सन्दर्भ में सर्वदा अध्यापक इस बात को ध्यान रखे कि उससे सामाजिक मर्यादा का अतिक्रमण न हो जो व्यक्तिगत या सामाजिक रूप से उसे अपराधी न बनावें। मूल्ययुक्त अध्यापक धैर्य के टूट जाने पर जल्दीबाजी या हड़बड़ाहट में निर्णय नहीं लेता बल्कि उचित कार्य को मूर्त रूप प्रदान करता है। यदि समाज को मजबूत समाजिक मूल्य प्रदान करना है तो इसकी शुरुआत समाज के पुरोधा शिक्षक को करनी होगी। इस प्रचलित शिक्षा को एक नये साँचे में ढालकर समाज में देना होगा, जो मानव को मानवता प्रदान करे। मूल्यहीन मानव पशु श्रेणी में भी नहीं आ सकता। छात्रों की व्यक्तिगत आरोग्यता, भाषा, कला, सर्जनात्मकता तथा समाजिकता के विकास हेतु मूल्य का होना अनिवार्य है। अध्यापक का विद्वान या आजीविकावान होना ही उसकी सफलता का द्योतक नहीं बल्कि मूल्यवान इंसान होना उसकी सफलता का द्योतक है। यही संकल्पना एक व्यक्ति को राष्ट्रीय स्तर पर और राष्ट्र को वैश्विक स्तर पर श्रेष्ठ बनाती है। उत्तम मूल्यों के विकास से जीवन का सर्वाङ्गीण एवं निरन्तर विकास होता है जो शिक्षा की परिभाषा है। आज का समाज स्पर्द्धात्मक वातावरण में जी रहा है जो समाज को अर्थप्रधान तो बना रहा है लेकिन मूल्यों से दूर कर रहा है। आज हमें मानवीय समाज और स्पर्धात्मक समाज के बीच एक लक्ष्मण रेखा खींचनी है जो उस मूल्यहीन रावण का हनन करके मूल्ययुक्त समाज की स्थापना करे।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में हम अपने विचारों तक ही सीमित नहीं रह सकते। विश्व में जो परिवर्तन हो रहे है उनका असर जीवन पर और हमारे जीवन के तरीकों पर पड़ रहा है अतः शिक्षक आधुनिकतम विचारों तथा प्राचीन विचारों का ऐसा सामंजस्य स्थापित करे जिससे उसका शिक्षकत्व दूसरों के लिए आदर्श बने। राष्ट्र के सामने आज बड़े संकट का समय है सर्वत्र नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है यह हम प्रतिदिन की अप्रिय घटनाओं से परिचित हैं, शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा है। हम अपने देश के नागरिकों के विचारों को शिक्षा द्वारा ही परिष्कृत कर सकते हैं। इसके लिये आवश्यकता है आदर्शमूल्यों से युक्त शिक्षक एवं शिक्षाप्रणाली की जो उन्हें स्वावलम्बी बना सके तथा उनमें आत्मविश्वास ला सके। एक आदर्श शिक्षक से प्रेरित होकर ही शिष्य एक अच्छा नागरिक बन सकता है। शिक्षक की शिक्षा में मूल्यों की आवश्यकता एवं

उपयोगिता वर्तमान में अधिक बढ़ गयी है, क्योंकि भारत एक विकासशील देश है और विकास की अवस्था में उचित निर्देशन अत्यन्त सहायक होता है जो एक योग्य शिक्षक ही प्रदान कर सकता है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान में इस बात की आवश्यकता है कि हम भारतीय सभी धर्मों, सम्प्रदायों की नैतिक शिक्षाओं तथा तथा सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश अनिवार्यतः स्कूल, कॉलेज तथा विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में करें और उन पर शोध विषयक कार्य निष्पक्षता से करने का प्रोत्साहन की व्यवस्था सुनिश्चित की जाये जिसके माध्यम से हमारी नई पीढ़ी भारतीय चिन्तकों का अनुसरण कर संस्कारित होती रहे। साथ ही नीर-क्षीर विवेक की सामर्थ्य से संकलित रहे जिससे सम्प्रदायवाद, अलगाववाद आदि के घेरे से बाहर आकर मूल्यों के तात्विक स्वरूप से अवगत हो सके। यहां यह ध्यातव्य है कि कोरे उपदेश उपदेश छात्रों पर प्रभाव डालने में समर्थ नहीं होंगे। इसके लिए परमावश्यक है कि शिक्षक स्वयं इन गुणों से संकलित हों, जिन्हें वे छात्रों में संचारित करना चाहते हैं।

सन्दर्भ-ग्रन्थ

- गुप्ता, नत्थूलाल **(2010),** मूल्यपरक शिक्षा और समाज, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली.
- चौबे, सरयू प्रसाद **(2003),** शिक्षा की दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- जोशी, धनञ्जय **(2005),** नैतिक शिक्षा और नागरिक चेतना, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली.
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा **(2005)** मुद्रणम् नवदेहली, प्रथम संस्करणम्, **2006** एनसीईआरटी.
- पाण्डेय, के.पी. **(2019),** शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी.
- पाण्डेय, के.पी. **(2007),** नवीन शिक्षा मनोविज्ञान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी.
- डागर, बी.एस., **(2001)** शिक्षा तथा मानव मूल्य, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ
- दुबे, श्यामचरण, **(2005)** समय और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- सक्सेना, डॉ. सरोज, **(2007)** शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, साहित्य प्रकाशन, आगरा
- अत्री, विनोद कुमार, **(2005)** उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, सुमित एन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली
- चतुर्वेदी, रश्मि, डॉ. हेमन्त खण्डाई, **(2011)** मूल्य शिक्षा.ए.पी.एच. पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
- पाण्डेय, रामशकल, **(2005)** शैक्षिक परिवर्तन, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली
- मिश्र, डॉ. भास्कर (१९९५) शिक्षा एवं संस्कृति (नये सन्दर्भ), भावनाप्रकाशन.दिल्ली
- मिश्र, डॉ. भास्कर (२००८) शिक्षा दर्शन, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली

- समाज में मूल्यों का का परिवर्तमान परिदृश्य एवं उच्च शिक्षा, सम्पादक-डॉ. सुषमा श्रीवास्तव एवं डॉ. विनीता अग्रवाल, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्श, नई दिल्ली, 2008
- पाण्डेय, रामशकल (2009), मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
- पाण्डेय,रामतेज, कालिदास, कालिदासग्रन्थावली, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी, 2019
- शर्मा, ब्रह्मानन्द, श्रीहर्ष, नैषधीयचरितम्, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 2020